सं श्रो वि । एफ बी वि । 144-85 | 52094 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं वहरियाणा टैलीविखन, सैक्टर-6, फरीदाबाद, के अपिक श्री महाबीर सिंह तथा उसके प्रवत्धकों के मध्य इसमें इसके बाद ज़िबित मामले में कीई श्रीधोगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विकाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10. की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की घारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिख्य मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मारा में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

वया श्री महाबीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?
सं ग्री विविश्यक्त हो । यह कि सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?
सं ग्री विविश्यक्त की राय है, कि मैंव हिरयाणा शहरी विकास
प्राधिकरण स्टेट श्रीफितर (हरटोकत्वर डिपॉटमैंट), संकटर-16, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री शंकर दयाल तथा उसके प्रवन्धकों
के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

• ग्रोर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिप्टिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिप्टिचना सं. 5415-8-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिप्टिचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उन्त अधिसुचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायांक्य, फरीदाबाद, कॉ विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु विदिष्ट करते हैं जोकि उन्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्रो शंकर दयाल की सेवाश्रों का समापन नेयायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो किस राहत का हकदार है?
संव श्रोविव /एफ व्हीव / 146-85/52106 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैंव गुडईयर इण्डिया
लि., मथुरा रोड, बल्लबगढ़, के श्रमिक श्री हर्षवर्धन गोयलिया तथा उसके प्रबच्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित नामलें
में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

क्या श्री हर्षवर्धन गीवलिया की सेवामों का समापन न्यांगीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो०वि०/एफ०डी०/162-85/52112.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय हैं कि मै० इन्जैक्टो लि०, 20/5,, मयुरा रोड्ड, फरोदावाद, के श्रमिक श्री महेन्द्र सिंह तथा उसके प्रवन्थकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोधोगिक विवाद है ;

म्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिगैय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रंब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त मिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबांद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री महेन्द्र सिंह की सेवाग्नी का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?